Sem. 3, ~~[illegible]~~ MN-1B

'निर्मला' उपन्यास की समीक्षा/ सारांश

हिन्दी उपन्यास साहित्य के शिखर पुरुष कथासम्राट मुंशी प्रेमचंद ने अनेक सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याओं का चित्रण करते हुए कई उपन्यास लिखे। इन उपन्यासों में मानव-जीवन का यथार्थ चित्रित करते हुए उसकी दिशा आदर्श समाज की निर्माण की ओर प्रवृत्त किया है। हमारे भारतीय समाज में नारी-जीवन के यथार्थ को आधुनिक युग में सबसे अधिक स्वर मिला है और इसे अपना स्वर देनेवाले साहित्यकारों में प्रेमचन्द अन्यतम हैं। नारी-केन्द्रित उपन्यासों में 'निर्मला' उपन्यास का स्थान अक्षुण्ण है। 'चाँद' पत्रिका में धारावाहिक रूप से प्रकाशित इस उपन्यास का प्रकाशन 1927 ई॰ में हुआ। यहाँ प्रेमचन्द ने बेमेल विवाह तथा दहेज-प्रथा के दुष्परिणामों का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है।

'निर्मला' एक लघु उपन्यास है, जिसे सत्ताईस ~~[illegible]~~ खण्डों ~~[illegible]~~ में विभक्त कर प्रेमचन्द ने प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास के केन्द्र में पन्द्रह वर्षीय सुन्दर और सुशील लड़की – निर्मला है। शहर के प्रसिद्ध वकील बाबू उदयभानुलाल और उनकी पत्नी कल्याणी अपनी पुत्री निर्मला का विवाह बाबू भालचन्द्र के ज्येष्ठ पुत्र भुवन मोहन से निश्चित करते हैं। उदयभानु की कमाई तो खासी थी किन्तु, संचय-भावना उनमें नहीं थी। निर्मला के विवाह में वे दिल खोलकर खर्च करते हैं, वर के पिता ने कह दिया था – 'आपकी खुशी हो दहेज दें या न दें।' किन्तु, विवाह से पहले ही बाबू उदयभानु अपने एक पुराने शत्रु के हाथों मारे जाते हैं और यह विवाह-संबंध कल्याणी के लाख गिड़गिड़ाने के बावजूद टूट जाता है। होनेवाला पति भुवनमोहन अपने पिता से कहता है – "कहीं ऐसी जगह शादी करवाइये कि खूब रुपये मिले। वकील साहब रहे ही नहीं, बुढ़िया के पास अब क्या होगा।

उपन्यासकार ने कथानक की इसी पृष्ठभूमि पर निर्मला ~~[illegible]~~ तथा उससे जुड़े अन्य जीवन की यथार्थ त्रासदी का चित्रण किया है। दहेज की वांछित रकम न दे पाने की हैसियत के कारण निर्मला को योग्य वर नहीं मिलता। उसका विवाह अधेड़ वकील मुंशी तोताराम के साथ हो जाता है, जिसकी पहली पत्नी नहीं रही और ~~आठ~~ जिसके तीन बेटे हैं – मंशाराम, जियाराम और ~~[illegible]~~ सियाराम। मंशाराम तो निर्मला का हमउम्र है। साथ ही, मुंशीजी की विधवा बहन रुक्मिणी भी

परिवार में है। बढ़ी हुई तोंद के मुंशी तोताराम के स्थूल देह में मंदाग्नि और बवासीर ने स्थायी वास कर लिया था। बाप की उम्र के पति के साथ बेमेल विवाह झेलती निर्मला पति से कटी-कटी रहती थी। किन्तु मुंशी तोताराम का प्रयास रहता था कि निर्मला को कोई कमी न हो, हर सुख-सुविधा मिले। अंग्रेजी स्कूल में पढ़नेवाले मंशाराम से निर्मला अंग्रेजी पढ़ती थी, किन्तु मुंशी तोताराम मंशाराम का निर्मला के साथ उठने-बैठने और नज़दीकियों को संदेह की दृष्टि से देखने लगते हैं। वे बड़े पुत्र मंशाराम को घर के बजाय हॉस्टल में डाल देते हैं। अपने को गलत समझे जाने को लेकर उसे ग्लानि होती है और खाना-पीना छोड़ देता है। वह रोगी हो जाता है और उसका देहान्त हो जाता है। यह घटना पूरे परिवार को शोकमग्न कर देती है। निर्मला को इस घटना के लिए जिम्मेदार मानते हुए दूसरा पुत्र जियाराम उसके गहने को चुराकर बाजार में बेच देता है। फिर वह भी आत्महत्या कर लेता है। सबसे छोटा पुत्र सियाराम घर से भागकर साधु बन जाता है। तोताराम उसे ढूँढ़ने के लिए निकल पड़ते हैं। इन त्रासद घटनाओं से निर्मला अत्यधिक परेशान और व्यथित रहने लगती है। अन्त में, जीवन से संघर्ष करते निर्मला की इहलीला समाप्त हो जाती है। घर से निर्मला की लाश निकलते समय तोताराम घर लौट कर आते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास के वस्तु का विन्यास इस आधिकारिक कथा के साथ-साथ अनेक प्रासंगिक कथाओं से युक्त है। इन प्रसंगों में निर्मला की छोटी बहन कृष्णा का विवाह, डॉ. सिन्हा और उनकी पत्नी सुधा का प्रसंग ~~जैसे अनेक~~ आदि हैं। ये प्रसंग उपन्यास की आधिकारिक कथा से जुड़कर उद्देश्य-पूर्ति में सहायक होते हैं। न केवल दहेज और बेमेल विवाह बल्कि अन्य अनेक सामाजिक समस्याओं - विधवा का अपमानित जीवन, साधुओं के पाखण्ड, अंध-विश्वास की जकड़न, आत्महत्या की समस्या — का यथार्थ चित्रण उपन्यासकार का उद्देश्य है।

उपन्यास का परिवेश नगरीय मध्यवर्गीय जीवन से संबद्ध है। इसकी पात्र-योजना का समन्वय बड़ी कुशलता से मुंशी प्रेमचंद ने किया है। पात्रों के चरित्र का उद्घाटन उपन्यासकार ने अनेक विधियों से किया है। इसके प्रभावशाली कथोपकथन भी पात्रों के चरित्र-उद्घाटन तथा कथा-गति को बढ़ाने में सहायक हैं। प्रेमचंद-साहित्य के अधीत विद्वान डॉ. कमल किशोर गोयनका लिखते हैं - "निर्मला का प्रेमचंद के उपन्यासों की कड़ी में महत्त्वपूर्ण स्थान है। ..... इसे प्रेमचन्द का प्रथम 'यथार्थवादी' तथा हिन्दी का प्रथम 'मनोवैज्ञानिक' उपन्यास कहा जा सकता है।" निश्चय ही, 'निर्मला' अपने सुगठित शिल्प एवं उपन्यास-कला की पूर्णता का परिचायक है।